अध्याय 29

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा. प्रार्थना के साथ अपने समूह, शिष्यों का निर्माण करने वाले इस पाठयक्रम को परमेश्वर के हाथों में सौपें।

2.	**आराधना** (20मिनट) *[परमेश्वर की विशेषताएं]* **परमेश्वर रक्षक है।**

पढ़ें। होने दें कि चार लोग निम्न वचनों को पढ़ें: यशायाह 37:14-20; 33-38; भजन संहिता 34:7; 2 राजा 6:8-23।

1. परमेश्वर ने किस प्रकार भूतकाल में अपने लोगों की सुरक्षा की थी।

संक्षेप में वर्णन करें कि परमेश्वर ने एलिय्याह भविष्यद्वक्ता तथा उसके सेवक को किस प्रकार बचाया।

तीन बातों पर ज़्यादा ज़ोर दें।

- परमेश्वर शत्रु द्वारा उसके शयन कक्ष में बोले जाने वाली बातों को भी जानता और अपने दासों को बताता है।
- परमेश्वर व उसकी सेना शत्रु की सेना से बढ़ी व ताकतवर है।
- परमेश्वर अपने लोगों की आँखें खोलकर उनके चारों ओर सुरक्षा करने वाले दूतों को अग्निमय रथों सहित दिखा सकता है।

2. आज परमेश्वर किस प्रकार से सुरक्षा करता है।

होने दें कि लोग अपनी गवाही के द्वारा बताये कि बीते दिनों में परमेश्वर ने उनकी किस तरह से सुरक्षा की थी।

आराधना

परमेश्वर का हमारा रक्षक होने के कारण आराधना करें। तीन तीन लोगों के समूह में होकर आराधना करें।

3.	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **उत्पत्ति 20:1-23:20**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **बताएं** (या अपने नोट में से **पढ़ें**) कि अपने दिये गये वचनों के आधार पर परमेश्वर के साथ एकान्त समय बिताने पर आपने क्या सीखा (उत्पत्ति 20:1-23:20)।

जब काई व्यक्ति अपने अनुभवों को बाँट रहा हो तो उसे गम्भीरता से लें तथा स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

4	**याद करना** (20मिनट) *[बाइबल]* **बाइबल का सही ढंग से स्पष्टीकरण**

सिखाएं। बाइबल की बातों का वर्णन करना हर एक मसीही की जिम्मेदारी है। वह सत्य को भ्रष्ट न करे (2 कुरिन्थियों 4:2) बल्कि सत्य के वचन को ठीक प्रकार से समझाता हो (2 तीमुथियुस 2:15)। यीशु और पौलुस दोनों ने ही हमें यह चेतावनी दी थी कि बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे (मत्ती 24:10-11; 1 तीमुथीयुस 4:1-2)। केवल यीशु की शिक्षाओं की सच्चाई ही लोगों को आज़ाद करेगी (यूहन्ना 8:31-32)।

जिस प्रकार से लोगों को सुरक्षित यात्रा करने के लिए यातायात नियमों की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार से स्वस्थ जीवन व्यतीत करने के लिए स्वास्थ्य सम्बन्धी नियम तथा समाज में मिलजुल कर जीवन व्यतीत करने के लिए सरकारी नियम होते हैं, उसी प्रकार बाइबल को सही ढंग से समझने के लिए बाइबल व्याख्या करने के लिए लोगों को कुछ नियमों की जरूरत होती है। हम बाइबल का बखान करने के लिए नौ महत्वपूर्ण नियमों पर गौर करेंगे।

नियम 1. स्वभाव व भाषा

- **परमेश्वर के बाइबल का लेखक होने के कारण, बाइबल एक आलौकिक पुस्तक है। अतः बाइबल मानवीय विचारों और उनके आचरण के लिए सम्पूर्ण आधार है। और बाइबल पूरी तरह से विश्वासयोग्य है। बाइबल के किसी भी खण्ड के दो अलग मतलब नहीं हैं।**
- **बाइबल एक स्वाभाविक पुस्तक है, क्योंकि परमेश्वर ने लोगों के द्वारा लोगों पर अपने वचनों को प्रगट किया है। इसलिए आपकी भाषा में बाइबल परमेश्वर का वचन है।**

1. बाइबल अपनी विशेषताओं में आलौकिक है।

पढ़ें 2 तीमुथीयुस 3:16 (2 पतरस 1:20-21; गिनती 23:19; तीतुस 1:2)

आधिकारिक।

बाइबल का लेखक पवित्र आत्मा है। बाइबल में खुद परमेश्वर के वचन पाए जाते हैं। अतः बाइबल केवल मानवीय विचारों और व्यवहार के लिए सम्पूर्ण अधिकार ही नहीं है वरन वह मसीही सिद्धान्तों और उनके आचरण का भी आधार है।

विश्वासयोग्य

परमेश्वर का वचन स्वयं परमेश्वर की ही विशेषताओं को प्रगट करता है। बाइबल एक अनन्त पुस्तक है, परन्तु उसे समय पर प्रगट किया गया है। बाइबल सत्य, पवित्र और न्यायसंगत है। अतः बाइबल पूरी तरह से विश्वास करने योग्य है। क्योंकि परमेश्वर सच्चा है और वह अपनी इच्छा को स्पष्ट तौर पर प्रगट करना चाहता है, इसलिए बाइबल का कोई खण्ड दोहरे मायनों वाला नहीं है। इसलिए आपको समझने का प्रयास करना चाहिए कि परमेश्वर हर एक अनुच्छेद में वास्तव में क्या कहना चाहते हैं।

2. बाइबल अपने स्वभाव में पूरी तरह से प्राकृतिक है।

पढें यूहन्ना 14:26;यशायाह 30:8 (यिर्मयाह 36:1-4)।

मूल भाषा।

बाइबल परमेश्वर द्वारा एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को दिया गया वचन है। परमेश्वर ने लोगों से बातचीत की और लोगों ने उसे लिखा। बाइबल उस समय की बोली जाने वाली भाषा में लिखी गयी पुस्तक है जिसके द्वारा परमेश्वर ने अपने वचनों को प्रगट किया था। पुराना नियम मूल रूप से इब्रानी भाषा में लिखा गया था(और इसका छोटा हिस्सा अरामी भाषा में लिखा गया है) और नया नियम यूनानी भाषा में लिखा गया है। सारी भाषाओं में अनुवाद की जाने वाली बाइबल का आधार मूल इब्रानी और ग्रीक भाषा मं लिखी गयी बाइबल ही है।

अनुवाद।

250 ई.पू ग्रीक भाषा में पुराने नियम का अनुवाद किया गया और नया नियम इस अनुवाद को ही परमेश्वर का वचन मानता है। ठीक इसी प्रकार से आपकी भाषा में बाइबल का आधिकारिक अनुवाद भी परमेश्वर का वचन है, क्योकि इसमें इब्रानी भाषा के पुराने नियम और ग्रीक भाषा में नये नियम को सटिक अनुवाद करने का प्रयास किया गया है। यदि आप बाइबल को मूल भाषा या किसी और भाषा में भी पढ़ सकते हैं तो बाइबल को और भी गहराई से समझने में सहायता मिलती है।

नियम 2.एकता व स्पष्टता

- **संसार में बाइबल ही परमेश्वर द्वारा लिखवाया गया प्रकाशन तथा उसकी योजना है।**
- **पुराना नियम और नया नियम मिलकर कुछ इस तरह से एकता का र्निमाण करते हैं: "पुराने नियम में, नये नियम के झठ छिपे हुए है। नये नियम में, पुराने नियम की बातों का मतलब बताया गया है"। अतः खुद ही उसके किसी भी खण्ड की सर्वोत्तम व्याख्या है।**

1. बाइबल में एकता है।

पढ़ें 1पतरस 1:10-12; मत्ती 5:17 (लूका 24:44-45; 2 कुरिन्थियों 1:20; कुलुस्सियों 2:16-17; इब्रानियों 10:1-4)।

तैयारी व पूरा होना

पुराना नियम और नया नियम आपस में एक दूसरे का विरोध नहीं करता है। वे एक दूसरे के पूरक है: पुराना नियम, नये नियम के लिए तैयारी करता है, और नया नियम, पुराने नियम की बातों को पूरा करता है।

प्रकाशन में प्रगति

लेकिन,हम प्रकाशन में एक प्रगति को पाते हैं। बाइबल पुराने नियम को व्यवस्था, किस्म,भविष्यवाणी और प्रतिज्ञा कहती है"वह आने वाली भली बातों की परछाई है" और नया नियम "मसीह में पायी जाने वाली वास्तविकताएं हैं।" नया नियम हमें सिखाता है कि परमेश्वर मसीह में हाकर किस प्रकार पुराने नियम की व्यवस्थाओं, किस्मों, भविष्यद्वाणियों और प्रतिज्ञाओं को पूरा करते हैं। इसलिए पुराने नियम को हमेशा नये नियम के प्रकाशन में होकर समझाया जाना चाहिए। नये नियम की शिक्षाएं मानक ये प्रासांगिक हैं।

2. बाइबल खुद अपना अर्थ समझाती है।

लूका 10:25-28 पढ़ें। यीशु ने लोगों द्वारा बाइबल में लिखी बातों पर आधारित प्रश्नों का उत्तर बाइबल में ही लिखी बातों के द्वारा ही दिया। उसने बाइबल के एक अस्पष्ट खण्ड को (व्यवस्थाविवरण 24:1) बाइबल के दूसरे खण्ड में दी गयी स्पष्ट शिक्षा द्वारा समझाया (उत्पत्ति 1:27; 2:24;मत्ती 19:3-8)। इस तरह से देखें तो बाइबल स्वयं ही अपना अर्थ समझाती है। बाइबल के किसी भी खण्ड का अर्थ बाइबल में ही बहुत अच्छे से दिया गया है। बाइबल के किसी भी खण्ड के दो अलग अलग मायने नहीं होते। इसलिए हमेशा परमेश्वर की मूल इच्छा को जानने की कोशिश किया करें।

नियम 3. पवित्र आत्मा और विश्वास

- **बाइबल का परमेश्वर, बाइबल का लेखक और उसकी विषय वस्तु है।**
  परमेश्वर का पवित्र आत्मा लोगों को बाइबल में लिखी बातों को समझने में सहायता करता है।
- **यीशु मसीह पर विश्वास सदैव बाइबल में लिखे वचनों पर ही आधारित होता है।**
  इसलिए बाइबल को ठीक ढंग से समझने व उसे दूसरों को समझाने के लिए पाठकों को पवित्र आत्मा और अपने हृदय में यीशु पर विश्वास करने की ज़रूरत होती है।

1. जिन लोगों में विश्वास व पवित्र आत्मा है।

पढ़ें यूहन्ना 16:13-15; रोमियों 10:14-17 (1कुरिन्थियों 2:7-15)।

पवित्र आत्मा बाइबल में प्रगट की गयी बातों को समझने के लिए लोगों के मन व दिमाग को प्रकाशमान करता है। बाइबल में परमेश्वर व उसकी इच्छा के बारे में जानकारी प्राप्त करने के कारण ही यीशु मसीह में विश्वास उत्पन्न होता है। केवल नया जन्म पाये हुए विश्वासी ही बाइबल की सही ढंग से व्याख्या कर सकते हैं।

2. जिन लोगों के पास पवित्र आत्मा या विश्वास नहीं है।

पढ़ें 2 कुरिन्थियों 3:14-17; 4:3-4 (मत्ती 21:29; 2 पतरस 3:16)

गैर मसीही लोग (जिसमें दूसरे धर्मों के अनुयायी भी शामिल हैं)मृतक हैं और उनकी आँखों पर अभी भी पर्दा पड़ा हुआ है, जिसके कारण वे किसी को भी बाइबल के बारे में सही तरीके से बता नहीं सकते। इस कारण बिना पवित्र आत्मा व मसीह पर विश्वास किये उनका बाइबल पढना व्यर्थ है। बाइबल के सन्दर्भ में, बाइबल के परमेश्वर के सन्दर्भ में, यीशु मसीह और मसीहियों के बारे में गैर मसीहियों द्वारा कही गयी बातों का इस तथ्यों को ध्यान में रखते हुए मूल्याँकन होना चाहिए कि ये लोग अभी तक नया जन्म पाये हुए नहीं हैं।

नियम 4. अपेक्षित श्रोतागण

- **बाइबल भिन्न प्रकार के श्रोतागणों को सम्बोधित करती है। जानने की कोशिश करें कि परमेश्वर उस विशेष अनुच्छेद में किस प्रकार के लोगों को सम्बोधित करना चाहते हैं। बाइबल के वायदों, चेतावनियों, आज्ञाओं और भविष्यद्वाणियों को सही तरीके से समझाने या समझने के लिए यह एक लाभदायक नियम है।**

- **कई बार बाइबल में दर्शाया गया एक सत्य संसार भर के सारे लोगों या सारे मसीहियों के लिए नियोजित किया गया होता है।**
- **कई बार बाइबल में दर्शाया गया एक सत्य किसी विशेष प्रकार के लोगों,समूह, आयु या परिस्थितियों के लिए नियाजित किया गया होता है।**

1. कई बार बाइबल के किसी विशेष अनुच्छेद में पाया जाने वाला सत्य सबके लिए तैयार किया गया होता है।

पढ़ें लूका 14:25-27। निम्नलिखित बाइबल खण्डों में पाये जाने वाले सिद्धान्त सारे संसार के लोगों पर लागू होते हैं: बाइबल पर आधारित अपने दृढ़ विश्वास को विकसित करने के लिए (लूका 14:25-27); मन फिराने व सुसमाचार पर विश्वास करने के लिए (मरकुस 1:15); यीशु मसीह पर विश्वास करने के लिए (यूहन्ना 3:16); अपना क्रूस उठाकर यीशु मसीह का अनुसरण करने के लिए (मरकस 8:34-38)। निम्नलिखित बाइबल खण्डों में पाये जाने वाले सिद्धान्त सारे मसीहियों के लिए है: अपने परिवार से बढ़कर यीशु मसीह और सुसमाचार के लिए वफादार होना (मरकुस 10:28-30);यीशु के समान एक दूसरे को प्रेम करने के लिए (यूहन्ना 13:34-35); यह जानने के लिए कि आपको यीशु मसीह के द्वारा आज्ञा मानने तथा पवित्र आत्मा द्वारा शुद्ध होने के लिए चना गया है (1 पतरस 1:1-2); और यह जानने के लिए कि आपने परमेश्वर की ओर से उपहार के तौर पर बहुमूल्य विश्वास प्राप्त किया है (2 पतरस 1:1)।

2. कई बार बाइबल के किसी विशेष अनुच्छेद में पाया जाने वाला सत्य सीमित श्रोताओ के लिए ही निर्धारित किया जाता है।

पढ़ें मरकुस 10:17, 21। निम्नलिखित बाइबल खण्डों में पायी जाने वाली सच्चाई कुछ विशेष लोगों के लिए ही सीमित की गयी ह: परमेश्वर के दास दाऊद के लिए (1इतिहास 17:7, 11-14); धनी जवान (मरकुस 10:20),विशेष समूह तक सीमित है: इस्राएल(मलाकी 1:1; यशायाह 6:8-10), किसी विशेष समयान्तराल के लिए सीमित : पुराने नियम के जमाने में सारे पुरूषों का खतना कराना (उत्पत्ति 17:9-14; गलातियों 5:3-4; 6:12-15) या किसी खास परिस्थिति के लिए सीमित: पश्चाताप करने के लिए (यिर्मयाह18: 6-10;यहेजकेल 33:11-20); पवित्र आत्मा की बात को सुनना और उनकी मानना (प्रकाशितवाक्य 2:7)।

नियम 5. साहित्यिक शैलियां और जोर देना

- **बाइबल में बहुत सी साहित्यिक शैलियां पायी जाती है। उस शैली को समझने का प्रयास करें जिसका इस्तेमाल परमेश्वर ने अलग अलग अनुच्छेदों में किया है और उन नियमों के आधार पर हर शैली का वर्णन करें जिससे साहित्य तरीके का पता लगाया जाता है।**
- **बाइबल में अलग अलग बातों पर ज़ोर दिया जाता है। जानने की कोशिश करें कि बाइबल के उस विशेष खण्ड में किसी सिद्धान्त की शिक्षाओं पर ज़ोर दिया जा रहा है, किसी काम को उकसाने पर, इतिहास को जोड़ने पर या वायदे करने पर या भविष्यद्वाणी पर जोर दिया जा रहा है।**

1. भिन्न प्रकार के साहित्य

बाइबल में सात अलग अलग प्रकार के साहित्य पाये जाते हैं जैसे व्यवस्थाएं, शिक्षाएं, इतिहास, कविताएं,गीत,नीतिवचन, दृष्टान्त, लाक्षणिक, प्रतिज्ञाएं, भविष्यद्वाणियां और प्रकाशन। हर प्रकार के साहित्य के अपने नियम होते हैं जो हमें साहित्य की किस्म के बारे में बताते हैं। हम ऐतिहासिक साहित्यों में तथ्यों, कविताओं में अलंकृत भाषाशैली, नीतिवचन में तुलना और प्रकाशन में चिन्हों या चित्रों की अपेक्षा करते हैं। बाइबल के विशेष अनुच्छेद की शैली को पहिचाने और हर शैली का उस नियम के साथ वर्णन करें जो उस साहित्य की किस्म के बारे में बताता है।

2. वाक्यों में अलग अलग बातों पर जोर देना।

बाइबल में अलग अलग बातों पर ज़ोर दिया जाता है। पहचानने की कोशिश करें कि विशेष बाइबल अनुच्छेद में सिद्धान्तों की शिक्षाओं पर, किसी कार्य को उकसाने पर, इतिहास को जोड़ने पर या भविष्यवाणी या प्रतिज्ञा, किस बात पर ज़ोर दिया जा रहा है।

जब जोर सिद्धान्तों की शिक्षा पर दिया जा रहा हो।

पढ़ें यूहन्ना 14:6। जब बाइबल के अनुच्छेद से आपको किसी सिद्धान्त को समझाने का प्रयास किया जा रहा हो, तो आप उस पर विश्वास करें। यूहन्ना 14:6 में, सिद्धान्तों की शिक्षा देने पर जोर दिया जा रहा है। संज्ञाओं पर गौर करते हुए सिद्धान्त का प्रतिपादन करें। उदाहरण के लिए संज्ञा "मैं(यीशु)","मार्ग", "सत्य","जीवन", "कोई नहीं" और "पिता" पर गौर करें। जिस सिद्धान्त पर हर एक व्यक्ति को विश्वास करना चाहिए वह है,"यीशु ही पिता तक पहुंचने का एकमात्र मार्ग है।"

जब ज्यादा जार कामों को प्रोत्साहित करने पर दिया जा रहा हो।

पढ़ें यूहन्ना 13:34-35। जब बाइबल के किसी खण्ड के द्वारा कामों को करने पर ज्यादा जोर दिया जा रहा हो, तो आपको उसे करना चाहिए। यूहन्ना 13:34-35में, ज्यादा जोर काम करने पर दिया जा रहा है। क्रिया जानने के द्वारा कार्य का प्रतिपादन करें। उदाहरण के तौर पर, क्रिया पर ध्यान दें "एक दूसरे को प्रेम करें","जैसे मैंने तुमसे प्रेम किया" "तुम भी एक दूसरे से करो", "सारे लोग जान जाएंगे","तुम मेरे चेले हो"। यहां जो आज्ञा हर एक मसीही को माननी चाहिए वह यह है कि" हम मसीहियों को एक दूसरे से ठीक उस तरह प्रेम करना चाहिए जिस प्रकार यीशु मसीह ने हमें प्रेम किया है"।

जब ज़ोर इतिहास को जोड़ने पर दिया जा रहा हो।

पढ़ें प्रेरितों 17:11। जब बाइबल में ऐतिहासिक घटनाओं से बातों को जोड़ने पर ज्यादा ज़ोर दिया जा रहा हो, तो आपको फैसला कर लेना चाहिए कि आप इतिहास के उस उदाहरण का अनुसरण करेगें या नहीं।

यदि इतिहास द्वारा दिया जाने वाला उदाहरण बुरा(नकारात्मक) है, तो आपको उसका अनुसरण कभी भी नहीं करना चाहिए। उदाहरण के लिए, मसीहियों को पुराने नियम में पाये जाने वाले इस्राएलियों के बुरे व्यवहार का अनुसरण नहीं करना चाहिए, जिसे हम 1 इतिहास 10:6-11 में देख सकते हैं। और मसीहियों को मण्डली के अगुवों के बुरे व्यवहार का भी अनुसरण नहीं करना चाहिए, जैसे नये नियम में दियुत्रेफेस था: जिसने प्रेरित यूहन्ना और उसके दल को अस्वीकार कर दिया, जिसने अपनी मण्डली में अन्य मसीहियों का स्वागत करने से इनकार कर दिया और जिसने मण्डली को सही और भले कामों को करने से रोका (3 यूहन्ना 9-11)।

मसीही अगुवे उनके हाथ में सौंपे गये विश्वासियों पर कभी प्रभुता नहीं कर सकत (मत्ती 20:25-28; 1 पतरस 5:1-4)।

लेकिन यदि इतिहास से दिया जाने वाला उदाहरण अच्छा(सकारात्मक)है, तो आप उस उदाहरण का अनुसरण कर सकते हैं, लेकिन आप ऐसी कोई मांग नहीं करेंगे कि दूसरे भी आपके समान उस उदाहरण का अनुसरण करें, जब तक कि बाइबल में ऐसा करने की कहीं और आज्ञा न दी गयी हो। उदाहरण के तौर पर, मसीही लोग बाज़ार में बेची जाने वाली और उनके मेज़बानों द्वारा सामने रखी जाने वाली कोई भी चीज़ खा सकते हैं। लेकिन अगर उनका विवेक नहीं अनुमति देता है तो वे उसे खाने से इनकार कर सकते हैं। अत: वे किसी मसीही का उसके मीट खाने या मीट न खाने के आधार पर न्याय नहीं कर सकते हैं। वे दूसरे मसीहीयों से उस प्रकार का व्यवहार करने पर दबाव नहीं डाल सकते हैं जैसा वे स्वयं व्यवहार करते हैं(रोमियों 14:1-15:14; 1 कुरिन्थियों 10:23-11:1)

अन्य उदाहरण। मसीही लोग बिरिया के लोगों का अनुसरण करते हुए प्रतिदिन बाइबल का अध्ययन करें व जाँच करें कि प्रचारक या उपदेशक बाइबल की सच्चाईयों का प्रचार कर रहे हैं या नहीं (प्रेरितों 17:11)। लेकिन वे दूसरे मसीहियों से भी उनके समान अच्छे उदाहरण का अनुसरण करने की उम्मीद या उनसे प्रतिदिन बाइबल पढ़ने की मांग नहीं कर सकते हैं।

जब ज्यादा जार वायदे करने या भविष्यवाणी करने पर दिया जा रहा हो।

पढ़ें यूहन्ना 14:21; उत्पत्ति 22:18 (गलातियों 3:8,16)। यदि अनुच्छेद में ज्यादा जोर वायदा करने या भविष्यवाणी करने पर दिया जा रहा हो तो, सबसे पहले अपने श्रोतागणों को (उत्पत्ति 22:15-18),परिस्थिति को (यिर्मयाह 18:5-10; यहेजकेल 18) और जहां सम्भव हो उसके पूर्ण होने को पहिचानें (मत्ती 8:11-12; 21:42-44; गलातियों 3:26-29; इफिसियों 2:11-22; पतरस 2:4-10)।

पुरान नियम की भविष्यवाणियों को नये नियम की शिक्षाओं के प्रकाश में होकर समझाया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, जब पुराने नियम में इस्राएल के लिए भविष्यद्वाणी की जाती है (आमोस 9:11-12), उसका अर्थ नये नियम में अन्यजातियों से आये विश्वासियों से होता है (प्रेरितों 15:14-19 तथा रोमियों 10:12 व गलातियों 3:28)

नियम 6. परम्पराएं व सिद्धान्त

- **बाइबल की शिक्षाएं, आज्ञाएं तथा निषेधाज्ञाएं निर्धारित करती हैं कि कलीसिया को किस प्रकार की शिक्षा प्रदान करनी चाहिए।**
- **कलीसिया की परम्परा कभी मानक नहीं होती। कलीसिया कभी बाइबल की शिक्षाओं को निर्धारित नहीं करती।**
- **परम्परागत विधियों और हर एक मण्डली के अंगीकार का मूल्याँकन बाइबल की स्पष्ट व विस्तृत शिक्षाओं के आधार पर किया जाना चाहिए।**

1.क्षेत्रीय परम्पराएं कभी मानक नहीं होतीं।

धार्मिक गतिविधियां।

पढ़ें यशायाह 1:8-18। परमेश्वर ने यशायाह को दिखाया कि मन्दिर की भेटों,धूप के साथ अराधना करना और उत्सव मनाना सब बेमायना हो गया है यहां तक कि परमेश्वर को उससे घृणा आती है, क्योंकि लोगों ने बुरे कामों को बन्द करना और परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना प्रारम्भ नहीं किया है।

दर्शन, स्वपन और भविष्यवाणियां

पढ़ें यिर्मयाह 23:16,21-22, 25-32, 36। परमेश्वर ने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता पर प्रगट किया कि उस देश में बहुत से ऐसे लोग हैं जो परमेश्वर के नबी होने का दावा करते हैं लेकिन उन्हें कभी परमेश्वर की ओर से नहीं भेजा गया है। झूठे भविष्यद्वक्ता अपने मन से दर्शन ओर स्वपनों की बातें करते हैं। उनके द्वारा की जाने वाली भविष्यवाणियां केवल शब्द मात्र ही होते हैं। वे उस परमेश्वर के वचनों को बिगाड़ते हैं जिसने अपने आप को बाइबल में प्रगट किया है।

मसीहियों को मनुष्यों की बातों और परमेश्वर के वचनों में अन्तर करना आना चाहिए। सच्चे भविष्यद्वक्ता(प्रचारक) विश्वासयोग्यता के साथ परमेश्वर के वचनों का प्रचार करते हैं। और परमेश्वर के वचनों के कारण ही लोग अपने बुरे कामों से फिरते हैं। यीशु मसीह की शिक्षाएं सारी भविष्यद्वाणियों का सार (निचोड़ और विषयवस्तु) हैं (प्रकाशितवाक्य 19:10)।

परम्पराए

पढ़ें मरकुस 7: 1-9; लूका 11:44-46। यीशु मसीह ने बाइबल में पाये जाने वाले परमेश्वर के वचनों को नजरअन्दाज करने और अपनी ही परम्पराओं और धारणाओं मानने तथा आगे आने वाली पीढ़ियों तक अपनी परम्पराओं को पहुचाने के लिए फरीसियों को डांटा। उसने फरीसियों पर परमेश्वर के वचनों का उनकी अपनी धार्मिक परम्पराओं से बदलने का आरोप लगाया (मत्ती 15:3)। उसने कहा कि धार्मिक परम्पराएं व शिक्षाएं 'केवल मनुष्यों द्वारा सिखाएं नियम हैं' और इन नियमों द्वारा परमेश्वर की आराधना करना व्यर्थ है (मरकुस 7:6-7)। यीशु ने कहा कि जो लोग परमेश्वर के वचनों से ज्यादा मनुष्यों द्वारा बनायी गयी परम्पराओं और धार्मिक नियमों को अधिक महत्व देते हैं वे उन अंधे अगुवों के समान है जिनसे दूर रहना चाहिए जिस प्रकार कोई व्यक्ति अनजान कब्र से दूषित होने से बचता है (मत्ती 15:13-14; लूका 11:44-46)।

2. मसीही सिद्धान्त बाइबल की उन शिक्षाओं पर आधारित होने चाहिए जिन्हें सही तरीके से समझाया गया हो।

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 4:6; 1 तीमुथियुस 3:14-15 (मत्ती 7:24,26; 2 तीमुथीयुस 3:16-17)।

मसीही सिद्धान्तों को बाइबल पर आधारित होना चाहिए।

मसीही सिद्धान्त बाइबल में अच्छी तरह से समझायी गयी शिक्षाओं, आज्ञाओं और निषेधाज्ञाओं पर आधारित होने चाहिए। बाइबल में पाये जाने वाली शिक्षाओं, आज्ञाओं व निषेधाज्ञाओं का किसी भी संस्था, मण्डली, अगुवे या किसी मण्डली के अगुवे, विज्ञान या दर्शनशास्त्र की शिक्षाओं, आज्ञाओं व निषेधाज्ञाओं से ज़्यादा अधिकार होता है। बार बार यीशु व अन्य प्रेरितों ने बाइबल में लिखी हुई बातों को हवाला दिया (लूका 10:25:26; प्रेरितों 2:16; प्रेरितों 13:40-41), उन्होंने अपनी बातों में कभी किसी प्रसिद्ध रब्बी, चर्च फादर, बाइबल का टीका करने वाले या किसी मसीही पुस्तक के लेखक की बातों का हवाला नहीं दिया। हर एक मण्डली के काम व उनके अंगीकार को बाइबल की स्पष्ट शिक्षाओं के आधार परखा जाना चाहिए, चाहे उनकी बातें मसीही विश्वास के लिए कितनी भी फायदेमन्द क्यों न हों।

कभी भी बाइबल में लिखी बातों में कुछ जोड़कर या उसमें से कुछ घटा कर बाइबल से आगे बढ़ने का प्रयास न करें। प्रेरित पौलुस हमारे लिए एक निमय निर्धारित करता है "धर्मशास्त्र में लिखी बातों से कभी आगे न बढ़ो"(1 कुरिन्थियों 4:6; 2 तीमुथियुस 3:16-17)। वह अपनी पत्रियों में कलीसियाओं को लिखित निर्देशों का पालन करन के लिए प्रोत्साहित करता है(फिलिप्पियों 4:9; 1 तीमुथियुस 3:14-15; व 2 पतरस 3:1-2,16)। स्वयं यीशु मसीह भी उन लोगों को चेतावनी देते हैं जो

अपनी बातों, अपनी व्याख्या या वर्णन को को बाइबल में जोड़ते या जो लोग बाइबल में लिखी हुई बातों को घटाने का प्रयास करते हैं(प्रकाशितवाक्य 22:18-19)।

यीशु मसीह की शिक्षाओं का इस्तेमाल करना चाहिए।

यीश् ने सिखाया कि लोग उसकी बातों पर विश्वास करें तथा उसका इस्तेमाल करें(यूहन्ना 8:24. मत्ती 7:24,26)। प्रेरित यूहन्ना आज्ञा देता है कि यदि कोई जन मसीह की शिक्षाओं में स्थिर बना नहीं रहता है या आपके पास आकर आपको मसीही की शिक्षा प्रदान नहीं करता है, ऐसे लोगों को घर में न आने दिया जाए(2 यूहन्ना 9-11)।

नियम 7, ज़िम्मेदारी

बाइबल का उददेश्य परमेश्वर की सच्चाई को प्रगट करते हुए मनुष्य के जीवन को बदलना है।

- **हर एक मसीही का यह अधिकार व ज़िम्मेदारी है कि वह बाइबल की शिक्षाओं का अध्ययन करे, वर्णन करें तथा अपने जीवन में उन शिक्षाओं को पालन करे।**
- **लेकिन, उसे बाइबल की शिक्षाओं को उचित ढंग से समझाना और उस शिक्षा का इस्तेमाल करना चाहिए।**
- **हर एक मसीही सत्य की शिक्षा दे सकता है। झूठी शिक्षाओं का खण्डन करना चाहिए।**

1.सत्य को जानने, समझने और उसका इस्तेमाल करने की जिम्मेदारी।

पढ़ें मत्ती 13:23; यूहन्ना 14:21,23. 1 पतरस 1:14-16 (यूहन्ना 8:31-32; 17:17; मत्ती 7:24; फिलिप्पियों 4:9)

ज्ञान

यीशु मसीह व उसकी शिक्षाएं सत्य हैं। उसने हमें सत्य को जानने, समझने व उसे अपने जीवन में इस्तेमाल करने की आज्ञा दी है। वह सत्य निश्चय ही हमें स्वतन्त्र व शुद्ध करेगा।

आज्ञाकारिता।

यीशु व प्रेरितों ने लोगों को अक्सर उनकी बातों को समझने, उन शिक्षाओं को अपने जोवन में प्रयोग करने व दूसरे लोगों को सिखाने के लिए प्रोत्साहित किया(एज्रा 7:10)

चरित्र

भविष्यद्वक्ताओं, यीशु मसीह और सभी प्रेरितों ने बाइबल पढ़ने वालों को प्रोत्साहित किया कि वे "पवित्र बनें, क्योंकि परमेश्वर भी पवित्र है।" पवित्रता होने का तरीका बाइबल की शिक्षाओं का पालन करना है, केवल उन शिक्षाओं को जानना नहीं।

2. झूठे शिक्षकों को अस्विकार करने की ज़िम्मेदारी।

पढ़ें 2 यूहन्ना 9-11(2 तीमुथीयुस 2:23-26; तीतुस 1:9; 1 यूहन्ना 2:20-23)।

मसीहियों को झ्ठे शिक्षकों से कोई वास्ता नहीं रखना चाहिए और उन्हें अपने घर में भी आने से मना कर देना चाहिए।

नियम 8. इतिहास

बाइबल की ऐतिहासिक विषय वस्तु में ऐतिहासिक घटनाएं और मानवीय व्यवहार का वर्णन किया गया है: जो कुछ परमेश्वर ने देखा वहीं वास्तव में मनुष्य के जीवन में घटा। मसीही व्यवहार को लेकर बाइबल में पायी जाने वाली ऐतिहासिक विषय वस्तु तब तक आदेशात्मक नहीं है, जब तक कि बाइबल उसे एक मानक नहीं मानती है।

- **बाइबल में लिखित सारी ऐतिहासिक घटनाएं व मानवीय व्यवहार के सारे उदाहरण बाइबल में प्राप्त शिक्षाओं की पुष्टि नहीं करते हैं, क्योंकि वे ज़्यादातर पाप व परमेश्वर की इच्छा को भ्रष्ट करने वाले कामों से दूषित होते हैं।**
- **बाइबल में पाये जाने वाली सारी ऐतिहासिक घटनाएं तथा सारे मानवीय व्यवहारों के उदाहरणों को बाइबल की स्पष्ट शिक्षाओं, आज्ञाओं व निषेधाज्ञाओं के प्रकाश में समझाया जाना चाहिए।**

बाइबल का इतिहास एक तरफ तो हमें बताता है कि हमारे सिद्ध परमेश्वर ने क्या किया और कहा, और दूसरी ओर वह असिद्ध लोगों व देशों के बारे में बताता है कि उन्होंने क्या कहा और किया।

1. उद्धार के सन्दर्भ में परमेश्वर का इतिहास तथा परमेश्वर के प्रति प्रतिउत्तर के सन्दर्भ में मनुष्यों को इतिहास।

बाइबल में ऐतिहासिक वर्णन के पीछे दो मुख्य उददेश्य है:

सम्पूर्ण इतिहास में परमेश्वर बोले और उन्होंने कार्य किया।

यह परमेश्वर की इच्छा है कि वह अपने आपको, अपनी योजना, अपनी इच्छा और इतिहास व सृष्टि की रचना करने में उसके हाथ का अपनी बातों व इतिहास में अपने सामर्थी कामों के द्वारा हम पर व्यक्त करे। परमेश्वर की सृष्टि (उत्पत्ति 1:1-2:4), उद्धार (निर्गमन 13: 21-22; 14::19-22, 29-31; 20:1-2) और न्याय का इतिहास बाइबल में लिखा और प्रगट किया गया है। यह बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इन माध्यमों के द्वारा ही हम जगत व इतिहास में जीवते परमेश्वर की वास्तविकता तथा उपस्थिति (उसकी पवित्रता,धार्मिकता,प्रेम व दया)के बारे में जान सकते तथा मानवजाति के प्रति उसके उद्धार की योजना को भी समझ सकते हैं।

सम्पूर्ण इतिहास में मनुष्य परमेश्वर के वचनों व कार्यों का प्रतिउत्तर देता है।

परमेश्वर की इच्छा यह भी कि वह हम पर व्यक्ति विशेष, लोगों के समूह तथा इतिहास में पाये जाने वाले देशों के परमेश्वर के वचन व कार्यो के प्रति प्रतिउत्तर को भी जानें। ये प्रतिउत्तर कई बार तो परमेश्वर को बहुत प्रसन्न करने वाले थे (उत्पत्ति 6:9) और कई बार उसे दु:खी करने वाले थे (उत्पत्ति 6:2; व्यवस्थाविवरण 7:3-4)। बाइबल में परमेश्वर की बातों व कामों के प्रति मनुष्यों के इन प्रतिउत्तरों व व्यवहारों को भी लिखा गया है। यह बहुत महत्वपूर्ण ह, क्योंकि इस उपाय से हम समझ सकते हैं कि मनुष्य परमेश्वर की नज़रों में क्या मायने रखता है और मनुष्य की अति पतित अवस्था को पहिचान सकते हैं(अर्थात उनकी अपवित्रता, अधार्मिकता, नफरत और उनकी निर्दयता को)(उत्पत्ति 6:5)।

2.बाइबल के ऐतिहासिक उदाहरण जिन्हें भली प्रकार से समझाया या जाँचा नहीं गया ।

बाइबल में मानव इतिहास मानक या आदेशात्मक नहीं है।

ज्यादातर समयों में, बाइबल में मानव इतिहास के बारे में अधिक विस्तृत वर्णन या मूल्यांकन नहीं किया गया है। इसलिए बाइबल में पाये जाने वाला मानव इतिहास या ऐतिहासिक उदाहरण आदेशात्मक नहीं हैं: अर्थात वे नहीं बताते कि मनुष्य को किस प्रकार विश्वास या व्यवहार करना चाहिए। वे केवल यह बताते हैं कि मनुष्यों ने किस प्रकार इतिहास में व्यवहार किया। हालांकि बाइबल में प्रगट की गयी परमेश्वर की इच्छा तब तक आदेशात्मक है (अर्थात लोगों को किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए)जब तक बाइबल परमेश्वर की किसी इच्छा को सीमित नहीं करती, परमेश्वर की इच्छा के प्रति मनुष्य का प्रतिउत्तर(जिस प्रकार से लोगों ने वास्तव में व्यवहार किया)भी तब तक आदेशात्मक नहीं होता जब तक कि बाइबल किसी प्रतिउत्तर को मानक के रूप में नहीं मानती।

बाइबल में मानवीय व्यवहार के बारे में परमेश्वर की इच्छा का प्रकाशन (निषेधाज्ञाएं, आज्ञाएं और स्पष्ट रूप से समझायी गयी शिक्षाएं: उदाहरण के तौर पर सांस्कृतिक विषयवस्तु), हमेशा ही आदेशात्मक व अधिकारिक होती है(जब तक की बाइबल उन्हें सीमित नहीं करती)। वह प्रगट करती है कि परमेश्वर मनुष्यों के किस प्रकार के व्यवहार की चाह करता है, अर्थात मनुष्यों के जीवन और इतिहास में क्या होना चाहिए! लेकिन बाइबल में मानवीय व्यवहार (ऐतिहासिक घटनाएं तथा व्यक्तिगत उदाहरण: उदाहरण के लिए ऐतिहासिक बातें) कभी आदेशात्मक या आधिकारिक नहीं होता है (जब तक कि बाइबल उसे आदेशात्मक न माने)। ये प्रगट करती है कि लोगों ने असल में परमेश्वर की निषेधाज्ञाओं, आज्ञाओं और शिक्षाओं के प्रति कैसा प्रतिउत्तर दिया, अर्थात वास्तव में मानवीय जीवन व इतिहास में क्या हुआ! बाइबल में ऐतिहासिक घटनाएं व व्यक्तिगत उदाहरण आदेशात्मक या आधिकारिक नहीं होते हैं बशर्ते उसी प्रसंग में या बाइबल में ही कहीं और स्पष्ट शिक्षा या कोई हवाला उसके समकक्ष न खड़ा हो। उदाहरण के तौर पर:

- एक से अधिक स्त्रियों से विवाह करना, जैसे लेमेक(उत्पत्ती 4:19), अब्राहम (उत्पत्ति 25:6) और दाऊद(1 इतिहास 3:1-9; 14:3) ने किया, वह सबके लिए अनिवार्य नहीं है(मत्ती 19:5-6)।
- लोकिन परमेश्वर के साथ चलना अनिवार्य है(उत्पत्ति 5:21), क्योंकि बाइबल कई स्थानों में हमें यह शिक्षा देती है(भजन 27:4)।

बाइबल में मानवीय इतिहास की व्याख्या की जा सकती है।

- एतिहासिक उदाहरण बाइबल की शिक्षाओं को तय नहीं करते हैं, लेकिन वे निश्चय ही वर्णन कर सकते हैं कि बाइबल हमें क्या शिक्षा देती है। उदाहरण के लिए :

- अन्यजातियों के समान बकबक किये बगैर गुप्त में प्रार्थना करने की यीशु मसीह की शिक्षा(मत्ती 6:5-8), निश्चय ही सारे मसीहियों के लिए आदेशात्मक शिक्षा है। हालांकि, यीशु मसीह के सुबह सुबह उठकर एकान्त जगह में जाकर प्रार्थना करने के उदाहरण का अनुसरण करने के बारे में स्पष्ट तरीके से न तो समझाया गया और न ही बाइबल में किसी और स्थान पर उसका मूल्यांकन किया गया, इस कारण वह आदेशात्मक नहीं है। मसीही लोग चाहें तो प्रात:काल में जाकर किसी एकान्त स्थान में प्राथन कर सकते हैं परन्तु ऐ किसी और मसीही से जबरजस्ती ऐसा करने के लिए नहीं कह सकते, और न ही वे यह कह सकते हैं कि यह तरीका एक अनिवार्य मसीही सिद्धान्त या अभ्यास है।
- इसी प्रकार से सारे जगत में जाकर सुसमाचार प्रचार करने की मसीह ही आज्ञा(मरकुस 16:15) निश्चय ही मसीही कलीसिया के लिए अनिवार्य है। हालांकि पौलुस का तरीका कि जहां पहले सुसमाचार प्रचार हो चुका है वह वहां नही प्रचार करेगा(रोमियों 15:20) न तो समझाया गया और न ही बाइबल के अन्य किसी स्थान इसका मूल्यांकन किया गया, अत: यह अनिवार्य नहीं है। मसीही चाहे तो वे पौलुस के उदाहरण का अनुसरण कर सकते हैं, लेकिन वे पौलुस की शैली को किसी दूसरे मसीही पर थोप नहीं सकते! पौलुस की शैली कोई शिक्षा नहीं थी जिसे किसी कलीसिया को अनुसरण करना जरूरी था। यह तो पौलुस का अपना काम करने का व्यक्ति तरीका था।

3. बाइबल में दिये गये ऐतिहासिक उदाहरण जिनका विस्तृत वर्णन या मूल्यांकन किया गया।

बाइबल में कई बार मानव इतिहास या ऐतिहासिक उदाहरणों का विस्तृत वर्णन या मूल्यांकन किया गया है। केवल इन मामलों में एक सामान्य शिक्षा को घटाया जा सकता है। इसलिए, केवल ऐसे ऐतिहासिक उदाहरणों का अनुसरण किया जा सकता है जिन्हें उचित ढंग से समझाया और जिनका मूल्यांकन किया गया हो। उदाहरण के लिए:

चेतावनी के तौर पर बाइबल का इतिहास

1 कुरिन्थियों 10:6-11 में लिखा है "ये बातें हमारे लिए दृष्टान्त ठहरीं, कि जैसे उन्होंने लालच किया,वैसे हम बुरी वस्तुओं का लालच न करें.....परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ी, दृष्टान्त की रीति पर थीं; और वे हमारी चेतावनी के लिए लिखी गयीं। बाइबल अनुच्छेदों पर आधारित होकर, कुछ ऐतिहासिक घटनाओं को (बुरे उदाहरण) बाइबल में लोगों को गलत काम करने से सावधान करने के लिए लिखा गया है। लोगों को बाइबल में लिखे गये सारे कामों को करने से बचना चाहिए और उनके दण्ड व परिणाम को देखकर सर्तक हो जाना चाहिए।

प्रोत्साहित करने के लिए बाइबल इतिहास।

1कुरिन्थियों 11:1 में लिखा है," तुम मेरी सी चाल चलों जैसे मैं मसीह की सी चाल चलता हूँ। बाइबल के इस अनुच्छेद के आधार पर मसीही लोग धार्मिक लोगों के उदाहरण का केवल तभी अनुसरण कर सकते हैं जब उनके कामों से परमेश्वर की इच्छा प्रगट होती हो। उदाहरण के लिए:

- मसीहियों को यह आज्ञा नहीं दी गयी है कि वे पौलुस के उदाहरण का अनुसरण करें, लेकिन अगर वे चाहें तो पौलुस के यात्राओं पर जाने, हर शहर में जाकर चेले बनाने और अपने जीवन निर्वाह करने के लिए काम करने के उदाहरण का अनुपालन कर सकते हैं, क्योंकि ये सारी बातें बाइबल में और भी स्थानों पर साफ साफ लिखी गयी हैं।
- लेकिन मसीही लोग मण्डली का र्निमाण करने के लिए आराधनालय को तोड़ने के उदाहरण का अनुसरण सम्भवत: नहीं करें(प्रेरितों 19:8-10)। क्योंकि ये ऐहिसाहिक घटनाएं केवल प्रासंगिक हैं और इन्हें सही से समझाया या उनका बाइबल में कहीं और मूल्यांकन नहीं किया गया है।

सामान्य शिक्षाओं के रूप में बाइबल का इतिहास।

अगर बाइबल की कोइ ऐतिहासिक घटना या व्यक्तिगत उदाहरण उसी सन्दर्भ में बाइबल में किसी और स्थान पर समझाया गया या परखा गया हो, तभी हम एक सामान्य शिक्षा को मान सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, एक ऐतिहासिक उदाहरण की व्याख्या या मूल्यांकन करके, पौलुस उन लोगों के साथ अपनी भौतिक आशीषों को बांटने का सिद्धान्त बताता है जो आपके साथ अपनी आत्मिक आशीषों को बांटते है(रोमियों 15:26-27; 1 कुरिन्थियों 9:14; गलातियों 6:6)।

नियम 9: संस्कृति

बाइबल के सांस्कृतिक संदर्भ में आज्ञाएं व मानव व्यवहार के बारे में शिक्षाएं पायी जाती है: जो परमेश्वर चाहते हैं मनुष्य के जीवन में वहीं होना चाहिए! बाइबल का सांस्कृतिक संदर्भ मसीही व्यवहार के लिए हमेशा आदेशात्मक होता ह, जब तक की बाइबल उसे सीमित कर देती ।

- **धरती में किसी भी स्थान की या इतिहास के किसी भी समयकाल की मानवीय संस्कृति या बाइबल में प्राप्त**

शिक्षाओं की पुष्टि नहीं करते हैं, क्योंकि वे ज़्यादातर पाप व परमेश्वर की इच्छा को भ्रष्ट करने वाले कामों से दूषित होते हैं।

- **परमेश्वर के राज्य कि संस्कृति, जिसके बारे में बाइबल शिक्षा देती है, निर्धारित करती है कि सारे जगत में और सारे कालों में मानवजाति की संस्कृति किस प्रकार की होनी चाहिए।**

संस्कृति व संस्कृति का सन्दर्भ।

- **पढ़ें** मत्ती 5:21-22; मत्ती 5:27-28; मत्ती 5:31-32; मत्ती 5:38-39; मत्ती 5:43-44; कुलुस्सियों 3:18-21

किसी भी समूह की संस्कृति चाहे वह इतिहास के किसी भी समयकाल का हो दो चीजों से मिलकर बना होता है:

- उनका वैश्विक दृष्टिकोण, उनकी सच्चाईयां और उसके विश्वास, उनके मूल्य व उनके आचरण, उनके अन्धविश्वास व उनके समय की आत्मा।
- किस तरह से उन्हें इस बात को समझाया गया है,उनका अनुभव व उनका आचरण, उनके तौर तरीके व रीति रिवाज़ और उनके रिश्ते व अनुसंधान।

बाइबल के संस्कृति सन्दर्भ में भी दो बातें पायी जाती है:

- प्रत्येक मानवीय संस्कृति के पापमय व बिगड़े पहलू की व्याख्या, जिससे दूर रहना या उसे बदलना चाहिए।

उदाहरण के लिए, रोमियों 1:18-32

- परमेश्वर के राज्य की संस्कृति की शिक्षा, जिसे स्वीकार करके अनुसरण करना चाहिए।

उदाहरण के लिए, मत्ती 5 से 7 अध्याय।

2. पापमय मानवीय संस्कृति।

पढ़ें रोमियों 1:18-32। एक तरफ देखें तो, बाइबल मनुष्यों के पापमय व दूषित स्वभाव का बिना किसी हिचक के व्याख्या व वर्णन करती है: हत्या (उत्पत्ति 4:8), विश्वासियों और अविश्वासियों में आपसी विवाह (उत्पत्ति 6:2,5) परमेश्वर से स्वतन्त्रता (उत्पत्ति 11:4), समलैंगिकता (उत्पत्ति 19:4-5), बलात्कार या विवाह से पूर्व यौन-सम्बन्ध (उत्पत्ति 34:2-7,31) मूर्तिपूजा (निर्गमन 32:1-8), भौतिकवाद व लालच(यशायाह 5:8), लौकिकता (यशायाह 5:12), सापेक्षवाद(यशायाह 5:20), अन्याय (यशायाह 5:23) बेईमानी व माया मोह (प्रेरितों 4:32-5:4), पापमय महत्वाकाक्षाएं (प्रेरितों 8:18-23) मण्डली पर हुकुम चलाने वाली अगुवाई (3यूहन्ना 9-10), मण्डली में झूठी शिक्षाओं व बुरे आचरण को सहना(प्रकाशितवाक्य 2:14-16,20-23)। मनुष्य के सारे पापमय पहलुओं को दूर किया जाना या बदलना चाहिए।

3. परमेश्वर के राज्य की संस्कृति।

पढ़ें व्यवस्थाविवरण 16:18-2; रोमियो 13:1-7; 1 पतरस 5:1-4।

बाइबल हमें सास्कृतिक स्पष्टीकरण व मूल्यांकन प्रदान करती है।

दूसरी और बाइबल हमें यह बताती है कि जगत के हर स्थान और मानव इतिहास के हर काल में किस प्रकार से मानवीय संस्कृति को बदलना चाहिए। परोक्ष रूप में बाबइल की सारी शिक्षाएं,आज्ञाएं और निषेधाज्ञाएं हमें सांस्कृतिक स्पष्टीकरण व मूल्यांकन प्रदान करते हैं, अर्थात वे हमें सिखाती है कि किस प्रकार हर जगह और हर काल में परमेश्वर मानवीय संस्कृति को बदलत हुए देखना चाहते हैं। बाइबल हमें बताती है कि मनुष्य को संसार को किस प्रकार देखना चाहिए(1 यूहन्ना 2:15-17), कौन सी शिक्षाओं पर उन्हें विश्वास करना चाहिए(यूहन्ना 8:31-32; 14:6; 17:17), कौन से नैतिक मूल्यां का उन्हें अनुपालन करना चाहिए(1 कुरिन्थियों 5:9-13; 6:9-11)उन्हें दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए(मत्ती अध्याय 5 से 7), तथा कौन से तौर तरीके परमेश्वर को पसन्द आने वाले हैं(मलाकी 2:14-16; 1 थिस्लुनिकियों 4:1-8)।

बाइबल हमें परमेश्वर के राज्य की संस्कृति सिखाती है।

बाइबल में, हर स्थान और हर काल में मानवीय संस्कृति को लगातार जांचा, निषेधित व आदेश दिया गया है। बाइबल में स्पष्ट निषेधाज्ञा, आदेश और शिक्षाओं के द्वारा परमेश्वर हर समाज के लोगों की संस्कृति को सम्बोधित करके, उसे बदलकर ज्यादा से परमेश्वर के राज्य की संस्कृति के समान बनाना चाहते हैं। परमश्वर एक विशेष संस्कृति के द्वारा एक विशेष जाति को बनाना चाहते हैं, जो संस्कृति परमेश्वर के राज्य की संस्कृति कहलाती है। (उदाहरण: पहाड़ी उपदेश-मत्ती अध्याय 5से7)।

बाइबल बताती है कि मानवीय संस्कृति को किस प्रकार का बनना चाहिए।

अत:,सांस्कृतिक मसले के बारे मं यह कहना बिलकुल अनुचित होगा कि वे बातें उस केवल उस काल तक ही सरोकार रखती थीं इसलिए वर्तमान काल में मसीहियों को उन बातों को अनुसरण करना जरूरी नहीं है।

बाइबल की पुस्तकें केवल कोई ऐतिहासिक पुस्तकें नहीं हैं जिन्हें विशेष तौर पर किसी एक सभ्यता के लिए लिखा गया था, परन्तु यह परमेश्वर के प्रकाशन की पुस्तक है, परन्तु यह पुस्तक उन बातों को बताती है जिन्हें परमेश्वर ने हर जगह और हर काल के लोगों में देखना चाहा।

बाइबल जिस जगह और काल में लिखी गयी थी वह उस समय की मानवीय संस्कृति के पापमय व भ्रष्ट पहलू को प्रगट करती है। इसका अर्थ है कि बाइबल सारे जगत की हर जगह व मानवीय इतिहास के हर काल के पापमय व भ्रष्ट मानवीय स्वभाव को प्रगट करती है।

बाइबल हमें यह भी बताती है कि जगत के हर स्थान व मानव इतिहास के हर काल में मानवीय संस्कृति को किस प्रकार का होना चाहिए। मसीहियों को बाइबल की सांस्कृतिक सभ्यता(शिक्षा, आज्ञाओं और निषेधाज्ञाओं) को सारे संसार की हर जाति के लिए आदेश मानते हुए मानव इतिहास के हर काल में सम्मान करना चाहिए।

बाइबल में आदेशात्मक संस्कृति के उदाहरण।

विवाह और तलाक के सन्दर्भ में यीशु मसीह की शिक्षा सदैव आदेशात्मक है (मत्ती 19:3-9)। यौन सम्बन्धों में अनैतिकता के खिलाफ मूसा और पौलुस की शिक्षाएं हमेशा आदेशात्मक है (लैव्यव्यवस्था 18:3-6,20,22-23;रोमियो 1:23-27)। परिवार के लोगों के प्रति जिम्मेदारी से जुड़ी पौलुस की शिक्षाएं हमेंशा f आदेशात्मक है (इफिसियों 5:22-33; कुलुस्सियों 3:18-21)। ऐ सारे हवाले हमें बताते हैं कि परमेश्वर हर काल और हर स्थान में विवाह व पारिवारिक जीवन में किस प्रकार का व्यवहार चाहता है।

इसी तरह से बाइबल की शिक्षाएं हमें यह भी बताती है कि वह सरकार में (रोमियो 13:1-7), अदालत में (व्यवस्थाविवरण 16:18-20), मण्डली में(इफिसियों 4:1-16;1 तीमुथियुस 3:1-15; 1पतरस 5:1-4),तथा मण्डली से बाहर समाज में (इफिसियों 4:17-5:17) मनुष्यों से किस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा करता है।

क्योंकि इन शिक्षाओं को बाइबल में किसी और शिक्षा के द्वारा सीमित नहीं किया गया है,इस कारण वे हर जगह तथा सब लोगों के लिए आदेशात्मक है।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रियाएं]*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर हेतु प्रार्थना**

दो या तीन के समूह में होकर प्रार्थना करते रहें। एक दूसरे तथा संसार के सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें।
   बाइबल का सही तरह स्पष्टीकरण करने के लिए 9 नियमों को याद करें तथा जब कभी आप बाइबल का अध्ययन करें या बाइबल पढं तो इन नियमों का पालन जरूर करें। समूह के दूसरे लोगों के साथ मिलकर 'बाइबल का सही स्पष्टीकरण' की शिक्षाओं के आधार पर प्रचार करें, शिक्षा दे और अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: निर्गमन 4:1- 7:13 से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। प्रश्नवाचक तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. बाइबल अध्ययन। घर पर ही अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। मत्ती 28:18-20 । विषय : कलीसिया का मिश्नरी लक्ष्य । बाइबल अध्ययन के पांच कदमों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।